आपके धर्मविज्ञान का निर्माण

अध्याय दो
मसीही धर्मविज्ञान की खोज

Third Millennium Ministries

© 2010 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

आपके धर्मविज्ञान का निर्माण

अध्याय दो

मसीही धर्मविज्ञान की खोज

विषय-वस्तु सूची **पृष्ठ संख्या**

I. परिचय 2
II. मसीही धर्मविज्ञान 2
समस्याएँ 3
कार्यकारी परिभाषा 4
एकता एवं विविधता 5
एकीकृत धर्मविज्ञान 5
बहु-धर्मविज्ञान 7
III. मसीही परम्पराएँ 8
परम्परा की परिभाषा 9
नकारात्मक परिभाषा 9
सकारात्मक परिभाषा 9
परम्पराओं की प्रवृत्तियाँ 10
सिद्धान्त 10
व्यवहार 11
कारूणिकता 11
परम्पराओं का महत्व 11
अपने बारे में जागरूकता 11
दूसरों के बारे में जागरूकता 12
IV. सुधारवादी परम्परा 13
उत्पत्ति एवं विकास 13
प्रवृत्तियाँ 14
विशेषताएँ 15
धर्मसुधार आन्दोलन के सोला 15
पवित्र शास्त्र की एकता 16
परमेश्वर का सिद्धान्त 17
मानवीय संस्कृति 18
V. उपसंहार 19

आपके धर्मविज्ञान का निर्माण

अध्याय दो
मसीही धर्मविज्ञान की खोज

I. परिचय

मुझे याद है कि एक बार मैं किसी काम से अपने एक मित्र के पास गया, परन्तु मैंने इस प्रकार व्यवहार किया मानो मैं उससे केवल मित्रवत् बातचीत के लिए गया था। मेरे वास्तविक कार्यक्रम को प्रकट होने में ज्यादा वक्त नहीं लगा। खुलासा होने पर तनाव हुआ, और समय इतना अच्छा नहीं बीता। मेरे मित्र के वे कथन मुझे आज भी याद हैं, "काश तुमने मुझे अपना वास्तविक कार्यक्रम बताया होता। अच्छा होता यदि मैं खुली आँखों के साथ यहाँ आता।"

कुछ हद तक धर्मविज्ञान के साथ भी ऐसा ही है। बहुत बार मसीही धर्मविज्ञानी धर्मविज्ञान के बारे में इस तरह से विचार-विमर्श करते हैं मानो उनके पास कोई कार्यक्रम ही न हो। "मैं तुम्हें केवल सच्चाई बता रहा हूँ", वे कहते हैं, "मैं केवल वही बता रहा हूँ जो बाइबल कहती है।" परन्तु वर्षों के दौरान मैंने यह सीखा है कि आमतौर पर मसीही धर्मविज्ञान के बारे में जितना संभव हो सके उतने खुलेपन से विचार करना बेहतर होता है। इस तरह प्रत्येक व्यक्ति खुली आँखों से विचार-विमर्श में भाग ले सकता है।

यह "आपके धर्मविज्ञान का निर्माण" की हमारी श्रंखला का दूसरा अध्याय है। और इस अध्याय में, हम मूलभूत जानकारी देंगे जो इस सम्पूर्ण अध्ययन का मार्गदर्शन करेगी। हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "मसीही धर्मविज्ञान की खोज," और हम कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाओं को बतायेंगे जो एक विशिष्ट मसीही धर्मविज्ञान को विकसित करने के तरीके की खोज में हमारा मार्गदर्शन करेंगी।

हम वृहद् स्तर से छोटे विचारों की ओर बढ़ते हुए तीन तरीकों से इस विषय को देखेंगे। प्रथम, हम अपने दृष्टिकोण को परिभाषित करेंगे कि किस प्रकार का धर्मविज्ञान मसीही है। द्वितीय, हम अनुसंधान करेंगे कि कैसे विशिष्ट धर्मविज्ञानी परम्पराएँ मसीही धर्मविज्ञान को आकार देती हैं। और तृतीय, हम संशोधित धर्मविज्ञान, मसीही विश्वास की विशिष्ट शाखा जो इन अध्यायों का आधार है, के कुछ मूलभूत नियमों को देखेंगे। आइए पहले हम मसीही धर्मविज्ञान के सामान्य विचार की ओर चलें। इन अध्यायों में जब हम इस शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका अर्थ क्या होगा?

II. मसीही धर्मविज्ञान

दुर्भाग्यवश, अक्सर हम मसीही धर्मविज्ञान के बारे में बात करते हैं, लेकिन यह स्पष्ट नहीं होता कि इसका मतलब क्या है। कई बार लोग इस शब्द का प्रयोग इस बात को दिखाने के लिए करते हैं कि वास्तव में मसीहियों का विश्वास क्या है। परन्तु मसीही अक्सर उन सब विश्वासों की पुष्टि करते हैं जो वास्तव में मसीही नही हैं। दूसरे इस शब्द का प्रयोग उस धर्मविज्ञान के बारे में बात करने के लिए करते हैं जिस पर मसीहियों को विश्वास करना चाहिए। परन्तु अधिकाँश मसीही इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि उन्हें क्या विश्वास करना चाहिए। इन सारी अस्पष्टताओं के कारण, हमें इस बात को स्पष्ट करने की जरूरत है कि इन अध्यायों में जब हम मसीही धर्मविज्ञान शब्द का प्रयोग करते हैं तो उसका मतलब क्या होगा।

हम तीन विषयों को देखेंगे: प्रथम, हम मसीही धर्मविज्ञान को परिभाषित करने में आने वाली समस्याओं को देखेंगे, द्वितीय, हम एक कार्यकारी परिभाषा प्रस्तावित करेंगे, और तृतीय, हम मसीही धर्मविज्ञान में शामिल एकता और विविधता के देखेंगे। आइए पहले हम उन समस्याओं को देखें जिनका हमें मसीही धर्मविज्ञान को परिभाषित करने का प्रयास करते समय सामना करना पड़ता है।

समस्याएँ

हमारी सबसे बड़ी समस्या उन तरीकों की खोज करना है जिनसे मसीही धर्मविज्ञान को गैर-मसीही धर्मविज्ञान से अलग किया जा सके। कई बार अन्तर को देखना इतना मुश्किल नहीं होता है, परन्तु बहुत बार मसीही धर्मविज्ञान को अन्य धर्मविज्ञानों से अलग करना अत्यधिक मुश्किल होता है।

इसे इस तरह से सोचें। जब हम मसीहियत को संसार के अन्य बड़े धर्मों के साथ देखते हैं, तो कई ऐसे धर्मविज्ञान हैं जिन्हें आसानी से मसीही विश्वासों से अलग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इस तथ्य के बावजूद कि कुछ लोगों ने मसीहियत को हिन्दू धर्म से मिलाने की कोशिश की है, हिन्दू धर्म का बहुईश्वरवाद इसे मसीही विश्वास से बहुत अलग बना देता है, इतना अधिक कि धर्मविज्ञान की दोनों प्रणालियों में कोई असमंजस पैदा नहीं होता है।

दूसरी तरफ, हिन्दू धर्म की अपेक्षा इस्लाम धर्म मसीहियत के कहीं अधिक करीब है। मसीहियत के समान इस्लाम भी अपनी विरासत को अब्राहम से जोड़ता है। यही नहीं, इस्लाम के पैगम्बर और उनके अनुयायी कुरान को लिखते समय मसीही शिक्षाओं के सम्पर्क में थे। अत: मसीहियत और इस्लाम में कई प्रकार की समानताएँ हैं। फिर भी, बड़ी आसानी से इस्लाम को मसीही विश्वास से अलग किया जा सकता है क्योंकि उनके बीच में स्पष्ट और आधारभूत अन्तर हैं, जैसे कि मसीहियत का यीशु मसीह को ईश्वर और सर्वोच्च बनाना इस्लाम के द्वारा मान्य नही है।

और यहूदी धर्म को देखें। यहूदी धर्म मसीहियत से और भी करीबी रूप से जुड़ा और उसके समान है क्योंकि मसीहियत यहूदी धर्म में से निकली। परन्तु, यहूदी धर्म यीशु के मसीह होने का इनकार करता है जिस कारण कुछ लोग इन दोनों धर्मों के बारे में असमंजस में पड़ जाते हैं।

इन धर्मों तथा संसार के अन्य बड़े घर्मों के धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण मसीही धर्मविज्ञान से इतने अधिक अलग हैं कि ज्यादातर लोगों को इनके बीच अन्तर करने में कोई परेशानी नही होती है। हम अपने और उनके धर्मविज्ञान के बीच ठोस सीमारेखा को खड़ा कर सकते हैं।

साथ ही, बहुत से धर्मविज्ञान के विद्यालय मसीही और गैर-मसीही विचार को मिलाकर वास्तविक मसीहियत को अन्य घर्मों से अलग करना मुश्किल बना देते हैं। ऐसी मिलावट को हम हमारे समय के प्रचलित गलत मसीही सम्प्रदायों में देख सकते हैं, जैसे यहोवा साक्षी, मोरमोनवादी, मसीही विज्ञान, और सन यंग मून का विश्वास। यह उन कलीसियाओं और संस्थाओं में भी पाया जा सकता है जिन्होंने आधुनिक उदारवाद के पक्ष में अपने से पहले के लोगों के धर्मविज्ञानी स्तरों को त्याग दिया है। अब, इन मिलावटी धर्मों के कुछ पहलुओं को आसानी से गैर-मसीही के रूप में पहचाना जा सकता है, परन्तु अन्य तत्व सच्ची मसीहियत के बहुत करीब हैं। इस कारण, ऐसी परिस्थितियों में हमारे लिए मसीही तथा गैर-मसीही धर्मविज्ञानों में स्पष्ट रूप से अन्तर करना मुश्किल हो जाता है।

इससे भी बदतर, मसीह में वफादार विश्वासियों के बीच धर्मविज्ञानी तस्वीर के बारे में सोचें। वास्तविक मसीहियत में भी, मसीही धर्मविज्ञान को एकवचन की बजाय बहुवचन में प्रयोग करना अक्सर आसान होता है। मसीहियत के इतने विविधरूप हैं कि हर व्यक्ति की सन्तुष्टि के लिए इस बात की पहचान करना असंभव है कि मसीहियत के किस रूप को सच्चा माना जाए। क्या सच्चे मसीही धर्मविज्ञान में पूर्वी ऑर्थोडोक्स कलीसियाओं की शिक्षाएँ शामिल हैं? और रोमन कैथोलिक सिद्धान्त? प्रोटेस्टेन्ट विश्वास का सबसे शुद्ध रूप कौनसा है: एंग्लिकन, बैपटिस्ट, लूथरन, मैथोडिस्ट, या प्रेस्बिटेरियन? कलीसिया का लगभग प्रत्येक वर्ग मसीहियत की विभिन्न शाखाओं की शुद्धता की जाँच अपने तरीके से करता है, और लगभग प्रत्येक शाखा यह मानती है कि उसका धर्मविज्ञान सबसे शुद्ध है। इन मसीही असहमतियों के नाते, मसीही धर्मविज्ञान को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना और भी मुश्किल हो जाता है।

मैं अपनी कक्षाओं में बारम्बार अपने विद्यार्थियों से कहता हूँ कि वे मुझे ऐसे सिद्धान्तों की सूची, जिन पर विश्वास करना मसीही गिने जाने के लिए जरूरी है, देकर मेरी सहायता करें कि मैं मसीही धर्मविज्ञान को संसार की अन्य सभी धर्मविज्ञानी प्रणालियों से अलग कर सकूँ।

विद्यार्थियों को आवश्यक मसीही विश्वासों की एक बहुत लम्बी सूची लाने में ज्यादा समय नहीं लगता है। उनमें इस प्रकार के कथन होते हैं: यीशु प्रभु है, यीशु उद्धारकर्ता है, यीशु उद्धार का एकमात्र मार्ग है,

यीशु हमारे पापों के लिए मरा, यीशु मृतकों में से जी उठा, परमेश्वर त्रिएक है, यीशु पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है, सब मनुष्य पापी हैं, धार्मिकता केवल विश्वास के द्वारा मिलती है, मसीहियों को पवित्र होना चाहिए, बाइबल परमेश्वर का अचूक वचन है। आप देख सकते हैं कि इन सब पर विश्वास करना तो दूर, केवल इन विचारधाराओं को समझने के लिए ही व्यक्ति को सुशिक्षित और योग्य होना चाहिए।

कक्षा से ऐसे उत्तरों को पाने के बाद, मैं अक्सर उनकी तरफ घूमकर उनसे एक महत्वपूर्ण सवाल पूछता हूँ: मसीही बनते समय आपमें से कितने लोगों ने इन शिक्षाओं पर विश्वास किया? और निस्सन्देह, उनमें से अधिकाँश यह अंगीकार करते हैं कि उन्होंने इनमें से केवल कुछ पर विश्वास किया। फिर मैं उन से पूछता हूँ, तो क्या तुम एक मसीही नहीं थे और क्या तुम्हारे पास मसीही धर्मविज्ञान नहीं था? उस समय भी जब तुमने इन शेष सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं किया था?

निस्सन्देह वे सिद्धान्त जिन्हें विद्यार्थी आमतौर पर अपनी सूची में शामिल करते हैं वे महत्वपूर्ण मसीही शिक्षाएँ हैं। परन्तु यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि इन सिद्धान्तों को समझने या उन पर विश्वास करने की बात तो दूर, इनमें से कुछ को सुनने के बिना भी एक व्यक्ति के पास सच्चा मसीही विश्वास और मसीही धर्मविज्ञान हो सकता है।

कौन से सिद्धान्त सच्चे मसीही विश्वास के लिए पूर्णत: जरूरी हैं? मसीही धर्मविज्ञान का निम्नतम स्तर क्या है? वास्तव में, केवल परमेश्वर ही निश्चित तौर पर जानता है कि सीमा रेखा कहाँ है।

ये वे समस्याएँ हैं जिनका मसीही धर्मविज्ञान को परिभाषित करने का प्रयास करते समय हमें सामना करना पड़ता है। कुछ अन्य धर्मों के संबंध में, हमारे लिए स्वयं की अलग पहचान करना मुश्किल नहीं है। परन्तु इस बात को स्पष्ट रूप से जानना बहुत मुश्किल है कि सच्चा मसीही बनने के लिए धर्मविज्ञान में किन तत्वों का होना जरूरी है।

मसीही धर्मविज्ञान की ये समस्याएँ मुझे एक कारगर परिभाषा को प्रस्तावित करने की ओर ले जाती हैं जो इन अध्यायों में हमारे विचार-विमर्श का मार्गदर्शन करेगी। यह परिभाषा उठाए जा सकने वाले प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नहीं देगी, परन्तु यह हमें एक महत्वपूर्ण और सहायक स्पष्टता प्रदान करेगी। यह एक सिद्ध परिभाषा नहीं होगी, परन्तु हमारे आगे बढ़ने हेतु प्रयोग के लिए यह पर्याप्त होगी।

कार्यकारी परिभाषा

इन अध्यायों में हम मसीही धर्मविज्ञान की हमारी परिभाषा को मसीही विश्वास की सुप्रसिद्ध और प्राचीन अभिव्यक्ति पर केन्द्रित करेंगे, जो प्रेरितों का विश्वास कथन कहलाती है। यह विश्वास कथन दूसरी सदी में अस्तित्व में आया और छठी सदी में इसने अपना वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया। संसार भर के मसीही अपने मसीही विश्वास के सार के रूप में सदियों से इस विश्वास कथन को बोलते आए हैं। आप जानते हैं कि यह कैसा है:

मैं स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता,
सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ।
मैं उनके इकलौते पुत्र, हमारे प्रभु पर विश्वास करता हूँ,
जो पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आए,
और कुँवारी मरियम के द्वारा जन्म लिया।
पुन्तियुस पिलातुस के अधीन उन्होंने कष्ट सहा,
क्रूस पर चढ़ाए गए, मारे गए, और गाड़ गए,
वे अधेलोक में उतरे।
तीसरे दिन वे मृतकों में से पुन: जी उठे।
वे स्वर्ग में चढ़े
और सर्वशक्तिमान पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ में विराजमान हैं।

वहाँ से वे जीवितों और मृतकों का न्याय करने आयेंगे।
मैं पवित्र आत्मा,
पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,
सन्तों की सहभागिता,
पापों की क्षमा,
देह के पुनरूत्थान,
और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ। आमीन।

मसीही विश्वास की यह विश्वव्यापी अभिव्यक्ति मसीहियत को बहुत ही सरल और आवश्यक तरीकों से स्पष्ट करती है। और यह मसीही धर्मविज्ञान की हमारी मूलभूत परिभाषा का कार्य करेगी। हमारे उद्देश्यों के लिए, उन सभी धर्मविज्ञानों को मसीही धर्मविज्ञान माना जाएगा जो इस विश्वास कथन के अनुरूप हैं।

अब, हमें यह स्वीकार करने की जरूरत है कि प्रेरितों के विश्वास कथन में कुछ ऐसे विश्वास शामिल हैं जिन्हें हम में से अधिकाँश लोग जरूरी नहीं मानते। उदाहरण के लिए, क्या हम वास्तव में यह कहना चाहते हैं कि लोगों के पास मसीही धर्मविज्ञान होने से पहले उन्हें पुन्तियुस पिलातुस के बारे में जानना जरूरी है? और इससे आगे, मैं यह कहने का जोखिम लूँगा कि हममें से बहुत से लोगों को यह भी पता नहीं है कि "सन्तों की सहभागिता" का मतलब क्या है।

साथ ही, यह कहना सुरक्षित है कि प्रेरितों का विश्वास कथन उन कई मसीही विश्वासों को छूता है, जो इसके मूलभूत स्तरों से आगे मसीही धर्मविज्ञान का विकास करने के लिए जरूरी हैं। और यह मसीहियों को एक ऐसे धर्मविज्ञान के निर्माण का कार्य शुरू करने के लिए पर्याप्त विश्वासों की सूची प्रदान करता है जिसे वे एक दूसरे के साथ बाँट सकें।

उदाहरण के लिए, विश्वास कथन में सृष्टि का वर्णन है। यह त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों: पिता, उनके एकलौते पुत्र, यीशु मसीह, और पवित्र आत्मा का वर्णन करता है। यह यीशु के देहधारण, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के बारे में बताता है। यह पापों की क्षमा, सामान्य पुनरूत्थान, अन्तिम न्याय, और अनन्त जीवन की आशा के बारे में भी बताता है।

चूँकि यह इतना मजबूत और वृहद् आधार उपलब्ध कराता है, इसलिए हम प्रेरितों के विश्वास कथन का मसीही धर्मविज्ञान की हमारी कार्यकारी परिभाषा के रूप में प्रयोग करेंगे। यद्यपि हम ऐसे सिद्धान्तों के बारे में बात करेंगे जो इस छोटी सूची के पार जाते हैं, फिर भी हम इस बात से सन्तुष्ट होंगे कि यदि कोई धर्मविज्ञान इस विश्वास कथन के अनुरूप है तो वह मसीही धर्मविज्ञान होगा।

एकता एवं विविधता

जब हम मसीही धर्मविज्ञान को परिभाषित करने के लिए प्रेरितों के विश्वास कथन का प्रयोग करते हैं, तो यह तुरन्त ही स्पष्ट हो जाता है कि मसीही विश्वास में धर्मविज्ञान एकीकृत और विविधतापूर्ण दोनों है। हम एक पृथक्, एकीकृत मसीही धर्मविज्ञान की बात कर सकते हैं क्योंकि मसीहियों के बीच बहुत से आम विश्वास, रीतियाँ और भावनाएँ हैं। परन्तु हमें विविध मसीही धर्मविज्ञानों के बारे में बोलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए जो एक-दूसरे से अलग हैं क्योंकि मसीही उन विषयों पर कई प्रकार के विचार रखते हैं जिन्हें प्रेरितों का विश्वास कथन संबोधित नहीं करता है। आइए पहले हम मसीहियों के बीच एकता को देखें।

एकीकृत धर्मविज्ञान

जब हम विद्यमान विभिन्न कलीसियाओं और संस्थाओं को देखते हैं, तो एक अर्थपूर्ण रीति से मसीहियों के बीच धर्मविज्ञानी एकता की बात करना मुश्किल प्रतीत होता है। मैं आपको नहीं बता सकता कि कितनी बार गैर-मसीहियों ने मुझ से कहा है, "तुम मसीही लोग इस बात पर भी सहमत नहीं हो सकते कि

तुम्हारा विश्वास क्या है। तुम मुझसे एक मसीही बनने की अपेक्षा क्यों रखते हो?" और हमें यह मानना होगा कि कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि मसीह के अनुयायी मुश्किल से किसी बात पर सहमत हो सकते हैं। परन्तु विभाजन तस्वीर का केवल एक हिस्सा है।

जैसे प्रेरितों का विश्वास कथन बताता है, संसार के सारे सच्चे मसीही मिलकर एक "पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया" बनाते हैं। हमारे विभाजनों के बावजूद, मसीह की देह धर्मविज्ञानी रूप से एकीकृत है क्योंकि मसीही कुछ ऐसे मुख्य विश्वासों पर सहमत हैं जो उन्हें झूठे सम्प्रदायों और संसार के अन्य धर्मों से अलग करते हैं। इन अध्यायों में मसीही धर्मविज्ञान का अनुसंधान करते समय, हमें विश्वास की एकता का अंगीकार करने की जरूरत होगी जो सारे मसीहियों को एक साथ जोड़ता है।

प्रेरितों ने इफिसियों 4:4-5 में इस रीति से कलीसिया की एकता के बारे में बताया:

> *एक ही देह है, और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। (इफिसियों 4:4-5)*

वास्तव में, कलीसिया की सैद्धान्तिक एकता सभी मसीहियों का लक्ष्य होनी चाहिए। स्वयं यीशु मसीह ने यूहन्ना 17:22-23 में इसके लिए प्रार्थना की:

> *"वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं, मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उन से प्रेम रखा।" (यूहन्ना 17:22-23)*

कलीसिया को और निकटता से देखने पर, हम देखते हैं कि मसीहियों की एक-दूसरे के साथ विविध स्तरों की धर्मविज्ञानी एकता है। सर्वाधिक वृहद् स्तर पर, हमारी परिभाषा के अनुसार, सभी मसीही प्रेरितों के विश्वास कथन में अभिव्यक्त किए गए नियमों पर विश्वास के द्वारा धर्मविज्ञानी रूप से एकीकृत हैं। यह आधारभूत एकता माँग करती है कि हम उन सबके प्रति सम्मान, धीरज और प्रेम दर्शाएँ जो विश्वास कथन को मानते हैं, चाहे वे कलीसिया की किसी भी शाखा से संबंधित हों, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जो विश्वास कथन को मानता है वह संगी विश्वासी है। ऐसे वातावरण में, हमें "सत्य को प्रेम में कहना" सीखने की जरूरत है जैसा कि इफिसियों 4:15 में बताया गया है।

इससे बढ़कर, मसीहियों के बीच धर्मविज्ञानी एकता बढ़ जाती है जब हम ऐसे विश्वासों पर एकमत होते हैं जो विश्वास कथन में वर्णित विश्वासों से आगे जाते हैं। उदाहरण के लिए, ऑर्थोडोक्स, कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट मसीही त्रिएकता और मसीह की दिव्यता जैसे विश्वासों पर समान रूप से विश्वास करते हैं। परन्तु प्रोटेस्टेन्ट संस्थाएँ जो अपनी विरासत के प्रति सच्ची रही हैं उनमें गैर-मसीही कलीसियाओं की बजाय एक-दूसरे के साथ धर्मविज्ञानी एकता कहीं अधिक है।

यद्यपि हमारी प्रवृत्ति है कि हम उनके साथ एकता की कोशिश करते हैं जिनके अधिकाँश विश्वास हमारे समान हैं और जिनके साथ हमारी बहुत कम समानता है उनके साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार करते हैं, परन्तु प्रभु हम सबको एकता का सन्देश देते हैं। इस कारण, हमें मसीहियों के बीच विद्यमान अन्तरों को मसीह में हमारे एक समान विश्वास से भटकाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। मसीहियों के प्रत्येक सिद्धान्त पर सहमत न हो पाने के कारण निराश होने की बजाय, हमें समझने की जरूरत है कि मसीही लोग विश्वास के केन्द्रीय नियमों पर सहमत हैं। इस अर्थ में, मसीही धर्मविज्ञान एक एकीकृत वास्तविकता है। और यही नहीं, यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम मसीह की देह में सदा बढ़ने वाली धर्मवैज्ञानिक एकता को बढ़ावा दें।

जैसे प्रेरित पौलुस ने इफिसियों 4:14-16 में लिखा है:

> *ताकि हम... उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और घुमाए न जाएँ। वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ, जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-*

ठीक कार्य करने के द्वारा उसमें होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए। (इफ़िसियों 4:14-16)

कलीसिया के लिए परमेश्वर की इच्छा और जो लक्ष्य उन्होंने हमारे लिए रखा है वह धर्मविज्ञानी विभाजन नहीं है, परन्तु पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के अनुसार बढ़ती हुई धर्मवैज्ञानिक एकता है।

जबकि मसीहियों की एकता का स्तर अलग-अलग है, तो हमारे बीच विविधता के स्तरों को मानना और स्वीकार करना भी महत्वपूर्ण है। इस अर्थ में, हमारा केवल एक मसीही धर्मविज्ञान की बजाय, मसीही धर्मविज्ञानों के बारे में बात करना सही है।

बहु-धर्मविज्ञान

प्रोटेस्टेन्ट यह बात पहचानते हैं कि जब वे अपने सम्पर्कों को स्वयं की कलीसिया के बाहर बढ़ाते हैं, तो विविधता बढ़ती है। जब अलग-अलग संस्थाओं का एक-दूसरे से सामना होता है, तो उन्हें लगभग हर बार विविधता का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, जब पूर्वी ऑर्थोडोक्स और पश्चिमी कलीसियाएँ एक साथ आईं, तो उनके बीच अन्तर बहुत बड़े थे।

अब, कलीसिया के अन्दर विविधता का सामना करते समय, हमें एक गम्भीर प्रश्न उठाना है: हमारे बीच ये अन्तर क्यों हैं? हम सबके पास एक ही आत्मा है। हम सब उसी मसीह पर विश्वास करते हैं। हम सब केन्द्रीय विश्वासों पर समान रूप से विश्वास करते हैं। फिर, मसीहियों के बीच विविधता का क्या कारण है? इस मुद्दे पर बात करना, मसीही धर्मविज्ञानों के बीच कम से कम दो प्रकार के अन्तरों की पहचान करने में हमारी सहायता करता है।

पहले स्थान में, कुछ अन्तरों का अस्तित्व केवल इस कारण है कि हम प्रत्येक धर्मविज्ञानी सत्य का एक समान बल के साथ प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। सृष्टि के रूप में हमारी सीमाएँ इस बात को अवश्यम्भावी बना देती हैं कि हम मसीही विश्वास के कुछ पहलुओं को चुनकर उन्हें दूसरों से अधिक महत्व देते हैं।

हम एक समय पर हमारे विश्वास के सभी पहलुओं पर बराबर ध्यान नहीं दे सकते हैं। धर्मविज्ञानियों और धर्मविज्ञान की यह समस्या अक्सर मसीहियों के बीच सैद्धान्तिक विविधता को स्पष्ट कर देती है। चुनाव और महत्व से आई यह विविधता पूर्ण है और परमेश्वर द्वारा स्वीकृत है। हम जानते हैं कि परमेश्वर ऐसी विविधता की पुष्टि करते हैं क्योंकि धर्मशास्त्रीय लेखकों ने भी जिन बातों को लिखा और जिन पर बल दिया उनमें अन्तर था।

उदाहरण के लिए, हमारे पास चार अलग-अलग सुसमाचार हैं क्योंकि परमेश्वर ने मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को अगुवाई दी कि वे यीशु के जीवन की सच्चाई के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करें। चूँकि पवित्र आत्मा की अचूक प्रेरणा के अधीन मसीहियों द्वारा बल दी जाने वाली बातों में अन्तर था, तो हमें खुश होना चाहिए कि यह बात आज के मसीहियों के बारे में भी सत्य है।

जिस प्रकार परमेश्वर विभिन्न प्रकार के फूलों और वृक्षों से प्रेम करता है, पहाड़ों और तराईयों से आनन्दित होता है तथा विभिन्न प्रकार के लोगों की सृष्टि से खुश होता है, उसी तरह वह अपनी सन्तानों को विभिन तरीकों से अपने धर्मविज्ञानों का विकास करते हुए देखकर भी खुश होता है।

हमें यह अपेक्षा रखनी चाहिए कि न्यूयॉर्क शहर के मसीही धर्मविज्ञान की बजाय ग्रामीण अफ्रीका का मसीही धर्मविज्ञान विभिन्न सत्यों को चुनकर उन पर बल देगा। हमें दक्षिण अमरीकी मसीही धर्मविज्ञान के बीजिंग के धर्मविज्ञान से अलग होने की अपेक्षा रखनी चाहिए। इस विविधता का कारण है कि प्रभु अपने द्वारा छुड़ाए गए लोगों की अगुवाई करते हैं कि वे अपनी स्वयं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और विशिष्ट जरूरतों के अनुसार अपने विश्वास के विभिन्न पहलुओं को अभिव्यक्त करें।

दूसरा, विविधता के अन्य रूप इतने हानिरहित नहीं हैं। उनके प्रति ज्यादा सावधानी की जरूरत है। महत्व देने या चुनाव के विषय होने की बजाय, ये अन्तर समूहों या व्यक्तियों के गलत सिद्धान्तों, व्यवहारों और रीतियों में भटकने का परिणाम है।

कलीसिया में इस प्रकार की विविधता उत्पन्न होने पर, कम से कम एक व्यक्ति या समूह एक गलत अवधारणा को रखता है। और कुछ परिस्थितियों में, प्रत्येक व्यक्ति गलत हो सकता है। और इन मामलों में, हमें नम्रता और ईमानदारी से यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि गलती कहाँ है।

गलती को जानने के लिए, एक तरफ हमें स्व-आलोचक, किसी भी गलत विश्वास को त्यागने के लिए तैयार होना चाहिए जो हमारे धर्मविज्ञान में प्रवेश कर गई है। और दूसरी तरफ, हमें दूसरे विश्वासियों को उनकी समझ को बढ़ाने में सहायता करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। कई बार यह बिल्कुल आसान होगा, परन्तु अन्य समयों पर यह प्रक्रिया अत्यधिक कठिन होगी। और हम इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं: मसीह के महिमा में लौटने तक हम स्वयं या दूसरों को गलतियों से पूर्णत: मुक्त नहीं कर सकेंगे। फिर भी, मसीह के अनुयायी होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं के प्रति स्वयं को सच्चे बनाए रखने और दूसरों को भी ऐसा ही करने में सहायता करने के लिए कठोर मेहनत करें। याद करें पौलुस 1 तिमुथियुस 4:16 में क्या लिखता है:

> *अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।*

अन्त में, जब हम मसीही विश्वास की तस्वीर को देखते हैं तो मसीह के अनुयायियों के बीच धर्मविज्ञानी एकता और विविधता को नापते समय हमें सीमाओं को पार करने से बचना चाहिए। यह जरूरी है कि हम कभी भी धर्मविज्ञानी एकता के महत्व का इनकार न करें-नहीं तो यह उस एकता का इनकार करना होगा जिसके लिए मसीह ने प्रार्थना की। परन्तु हमें दूसरे छोर पर जाकर यह अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए कि मसीह के आगमन से पूर्व हर व्यक्ति प्रत्येक मुद्दे पर सहमत हो जाए-इसका अर्थ हमारी मानवीय सीमाओं और हमारे जीवनों में पाप के निरन्तर प्रभाव का इनकार करना होगा।

इन अध्यायों में एक सच्चे मसीही धर्मविज्ञान का निर्माण करने के लिए कार्य करते समय, हम प्रेरितों के विश्वास कथन का हमारी धर्मविज्ञानी एकता की हमारी मूलभूत अभिव्यक्ति के रूप में प्रयोग करेंगे। यह हमें निरन्तर सभी विश्वासियों के साथ हमारी समानता के उस बड़े धरातल के प्रति जागरूक रखेगा। परन्तु साथ ही, चूँकि बहुत से सिद्धान्त प्रेरितों के विश्वास कथन के क्षेत्र के बाहर हैं, इसलिए यह हमें उस विविधता की भी याद दिलायेगा जिसकी हमें मसीहियों बीच सामना करने की अपेक्षा रखनी चाहिए।

अब जबकि हम देख चुके हैं कि इन अध्यायों में मसीही धर्मविज्ञान का अर्थ क्या होगा, तो हमें हमारे दूसरे विषय पर आना चाहिए: मसीहियत के अन्दर धर्मविज्ञानी परम्पराएँ। हमारे मसीही धर्मविज्ञान के निर्माण में विशिष्ट धर्मविज्ञानी परम्पराओं का क्या स्थान है?

III. मसीही परम्पराएँ

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम तीन शीर्षकों को देखेंगे: पहला, हम धर्मविज्ञानी परम्पराय् शब्द को परिभाषित करेंगे दूसरा, हम धर्मविज्ञानी परम्पराओं की कुछ प्रवृत्तियों की जाँच करेंगे और तीसरा, हम हमारे जीवनों में परम्पराओं के प्रभाव के प्रति जागरूक बनने के महत्व का अनुसंधन करेंगे। आइए पहले देखें कि मसीही धर्मविज्ञानी परम्परा से हमारा क्या मतलब है।

परम्परा की परिभाषा

सुसमाचारीय मसीही परम्परा शब्द का इतने अधिक अर्थों में प्रयोग करते हैं कि हमें इस बात को स्पष्ट करने की जरूरत है कि हम इसका प्रयोग कैसे करेंगे। हम इस मुद्दे को पहले एक नकारात्मक परिभाषा देकर यह बताते हुए स्पष्ट करेंगे कि हमारा मतलब क्या नहीं है, और पिफर हम एक सकारात्मक परिभाषा देकर बतायेंगे कि हमारा मतलब क्या है। सर्वप्रथम, हमें यह समझना है कि आज बहुत से सुसमाचारीय क्षेत्रों में परम्परा शब्द का एक बहुत ही नकारात्मक अर्थ है क्योंकि यह बहुत ही निकटता से उस से संबंधित है जिसे हम परम्परावाद कहेंगे।

नकारात्मक परिभाषा

जैसे जाँन फ्रेम ने हाल ही में कहा, "परम्परावाद" वहाँ विद्यमान होता है जहाँ सोला स्क्रिप्चरा का उल्लंघन होता है। एक शब्द में, परम्परावाद धर्मविज्ञानी विश्वासों को मानवीय सन्दर्भों पर आधारित करता है, आमतौर पर लम्बे समय से चली आ रही पारम्परिक प्राथमिकताओं पर, न कि पवित्राशास्त्र पर।

यह स्पष्ट है कि यीशु ने अपने समय में परम्परावाद का विरोध किया। यीशु शास्त्रियों, फरीसियों और सदूकियों की परम्पराओं के विरूद्ध दृढ़ता से खड़े रहे क्योंकि ये लोग अपने विचारों को पवित्र शास्त्र से अधिक महत्व देते थे। यीशु ने मरकुस 7:8 और 13 में उनसे ये शब्द कहे:

> *"तुम परमेश्वर की आज्ञाओं को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो। इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुमने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो, और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो।"*

अब, मसीह के अनुयायियों को परम्परावाद को त्यागना चाहिए क्योंकि यह मात्रा मानवीय विचार को वह अधिकार प्रदान करता है जो वास्तव में केवल वचन का है। चूँकि दैवीय प्रकाशन की बजाय मानवीय मूर्खता आसानी से हमारे विश्वास का मार्गदर्शन कर सकती है, इसलिए हमें परम्परावाद के हर रूप का विरोध करना चाहिए, जैसा कि यीशु ने अपने समय में किया।

दूसरा, यद्यपि हमें परम्परावाद का विरोध करना चाहिए, लेकिन परम्परा के बारे में हमारा एक अलग विचार होना चाहिए। एक धर्मविज्ञान के निर्माण में परम्परा कौनसी उचित भूमिका निभाती है?

सकारात्मक परिभाषा

यह हमारे आधुनिक सुसमाचारीय कानों को सुनने में अजीब लग सकता है, परन्तु प्रेरित पौलुस ने वास्तव में मसीह की देह में परम्परा के लिए एक सकारात्मक भूमिका की पुष्टि की। देखें कि वे 1 कुरिन्थियों 15:3 में कोरिन्थ के लोगों से क्या कहते हैं:

> *इसी कारण मैं ने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया।*

"पहुँचा दी" शब्द पाराडिडोमी (paradidwmi) है और "पहुँची" शब्द पारालम्बानो (paralambanw) है। पौलुस के लेखों में कई बार मसीही शिक्षाओं के उनके द्वारा स्थानान्तरण के विवरण के रूप में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है।

ये बातें हमारे विचार-विमर्श के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये वे शब्द हैं जिनका प्रयोग पहली सदी के यहूदियों के बीच यहूदी परम्पराओं की शिक्षाओं का वर्णन करने के लिए किया जाता था। पौलुस ने मसीही विश्वास को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और पीढ़ी से पीढ़ी तक पहुँचाई जाने वाली एक परम्परा के रूप में

देखा। यद्यपि हम परम्परा शब्द का प्रयोग पौलुस से थोड़े अलग ढ़ंग से कर रहे हैं, हमें मसीही परम्परा या मसीही परम्पराओं जैसे शब्दों को सुनकर परेशान होने की जरूरत नहीं है क्योंकि स्वयं पौलुस ने परम्परा की भाषा का सकारात्मक रीति से प्रयोग किया था।

अब हमारे उद्देश्यों के लिए, एक धर्मविज्ञानी परम्परा को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है:

> लम्बे समय से चला आ रहा धर्मविज्ञानी सिद्धान्त, व्यवहार या नियम जो कलीसिया की शाखाओं को एक-दूसरे से अलग करते हैं।

आइए इस परिभाषा को दो मुख्य भागों में बाँटें। पहला, यह "लम्बे समय से चला आ रहा सिद्धान्त, व्यवहार या नियम" है। इसका मतलब, इन अध्यायों में जब हम धर्मविज्ञानी परम्परा की बात करते हैं, तो हमारे मन में कोई ऐसी बात नहीं है जो अभी हाल ही में शुरू हुई हो। इसके विपरीत विश्वासों की एक प्रणाली हमारे लिए धर्मविज्ञानी परम्परा का रूप तभी लेती है जब वह कुछ लम्बे समय से विद्यमान रही हो। हमारी परिभाषा के अनुसार, वर्षों से कलीसिया की स्वीकृति को पाने वाले विश्वास ही परम्पराओं के रूप में योग्य हैं।

और दूसरा, एक धर्मविज्ञानी परम्परा "कलीसिया की शाखाओं को एक-दूसरे से अलग करती है।" अन्य शब्दों में, हमारे मन में विशेष संस्थाओं या विश्वासियों के समूहों की ऐसी बातें हैं जो उनकी पहचान कराने वाली विशेषताएँ हैं।एक बैपटिस्ट को बैपटिस्ट क्या बनाता है? बैपटिस्ट परम्परा। एक मेथोडिस्ट को कौनसी बात मेथोडिस्ट बनाती है? मेथोडिस्ट परम्परा। जब विश्वासियों के समूह एक लम्बी अवधि तक समान विचारों को मानते हैं, तो ये विचार उनके विशिष्ट धर्मविज्ञानी मार्ग बन जाते हैं। वे पाते हैं कि वे स्वयं को कलीसिया की दूसरी शाखाओं की बजाए किसी एक शाखा में सहज अनुभव करते हैं।

अब जबकि हम यह परिभाषित कर चुके हैं कि धर्मविज्ञानी परम्पराओं से हमारा क्या मतलब है, तो हमें इस पर भी ध्यान देना चाहिए कि धर्मविज्ञानी परम्पराओं की प्रवृत्तियाँ हैं।

परम्पराओं की प्रवृत्तियाँ

पिछले अध्याय में, हमने देखा कि धर्मविज्ञान में सिद्धान्त, व्यवहार और नियम शामिल हैं। इसलिए, इस बात पर ध्यान देना सहायक है कि मसीहियत की विभिन्न धर्मविज्ञानी परम्पराएँ इन तीन श्रेणियों में से एक, या संभवत: दो के अन्तर्गत आती हैं: वे जो सिद्धान्त पर बल देती हैं, जो व्यवहार पर बल देती हैं, और वे जो कारूणिकता को आगे बढ़ाती हैं। प्रथम, कलीसिया की कुछ शाखाओं की पहचान उनके द्वारा सिद्धान्तों पर दिए जाने वाले पारम्परिक बल से होती है।

सिद्धान्त

हम सब ऐसी संस्थाओं के बारे में जानते हैं जिनकी पहचान प्राथमिक तौर पर उनके द्वारा माने जाने वाले सिद्धान्तों से होती है। उनकी शैक्षिक सेवकाईयाँ और सैद्धान्तिक आधर उनके मसीही विश्वास का केन्द्र हैं। दुर्भाग्यवश, कलीसिया की ये शाखाएँ सैद्धान्तिक विवादों में बुरी तरह से उलझी हुई हो सकती हैं। और वे आमतौर पर बड़े स्तर पर सैद्धान्तिक एकरूपता पर बल देती हैं। सिद्धान्तों के साथ यह उलझाव अक्सर बुद्धिवाद की ओर ले जाता है, जहाँ विश्वास के आँकड़ों को सीखना और समझना अपने आप में एक साध्य बन जाता है।

व्यवहार

दूसरा, कलीसिया की अन्य परम्पराओं की पहचान उनके व्यवहारों से होती है। ऐसी बहुत सी कलीसियाएँ हैं जिनकी पहचान उनके कार्य से होती है, न कि उनकी शिक्षा से। उनकी मसीही सेवा और सक्रिय कार्यक्रम उनकी सबसे बड़ी ताकत है। उनके पास अक्सर उनके सदस्यों के द्वारा करने और न करने वाले कार्यों की एक लम्बी सूची होती है। परन्तु यह दुखद है कि कलीसिया की ये शाखाएँ मसीही विश्वास को अक्सर कार्यों तक सीमित कर देती हैं। मसीहियत का मतलब कुछ करना हो जाता है। और कार्य का यह उलझाव अक्सर कानूनवाद की ओर ले जाता है।

कारूणिकता

और तीसरा, कुछ अन्य धर्मविज्ञानी परम्पराएँ अपनी कारूणिकता के द्वारा पहचानी जाती हैं। मसीही विश्वास का भावनात्मक पहलू इन कलीसियाओं की मुख्य विशेषता है। धार्मिक सौहार्द को इतना अधिक महत्व दिया जाता है कि बहुत बार अन्य बातों का कोई महत्व नहीं रहता है। ये मसीही सिद्धान्तों के कारण परेशान होना नहीं चाहते हैं। और वे किसी विशेष प्रकार का व्यवहार तब तक नहीं करना चाहते हैं जब तक कि उनके कारण वे बेहतर महसूस न करें। इस कारण, कलीसिया की इन शाखाओं की पहचान भावनात्मक विशेषता के कारण होना असामान्य नहीं है।

यह कहने की जरूरत नहीं है, कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीही परम्पराओं की प्रवृत्तियों की जाँच विभिन्न रीतियों से करनी होगी। परन्तु यह कहना ठीक है कि धर्मविज्ञानी परम्पराओं की पहचान सामान्यत: इनमें से किसी एक या दो पर बल देने से होती है।

अब जबकि हम मसीही परम्पराओं के विचार को परिभाषित कर चुके हैं और इन परम्पराओं द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली प्रवृत्तियों को देख चुके हैं, तो हमें धर्मविज्ञानी परम्पराओं का धर्मविज्ञान के निर्माण में इन अध्यायों पर प्रभाव को भी पहचानना चाहिए।

परम्पराओं का महत्व

इन विषयों की जानकारी दो मुख्य भूमिका निभाती है: प्रथम, यह हमें स्वयं के बारे में ज्यादा जानने में सहायता करती है, और द्वितीय, यह हमें दूसरों के बारे में ज्यादा जानने में सहायता करती है। आइए एक क्षण के लिए सोचें कि धर्मविज्ञानी विद्यार्थियों को स्वयं को इन धर्मविज्ञानी परम्पराओं के प्रकाश में किस प्रकार देखने की आवश्यकता है।

अपने बारे में जागरूकता

अधिकतर मसीही अपने धर्मविज्ञान का निर्माण इस प्रकार से करते हैं जो तटस्थ या कलीसिया की धर्मविज्ञानी विचारधारा के प्रति उदासीन होते हैं। मैं आपको नहीं बता सकता कि कितनी बार मैं ने विद्यार्थियों को यह कहते हुए सुना है कि उनके पास कोई परम्परा नहीं है, वे केवल बाइबल पढ़ते हैं और पवित्र आत्मा उन्हें सिखाता है।

इस प्रकार का नजरिया बहुत प्रचलित था और पुनर्जागरण आधुनिकतावाद की बहुत सी विचारधाराओं द्वारा इसका समर्थन किया गया। पुनर्जागरण काल के बाद से बाइबल के गम्भीर शैक्षणिक अध्ययन का लक्ष्य स्वयं को धर्मविज्ञानी पूर्वाग्रहों और परम्पराओं से अलग करना था।

आप याद करेंगे कि मसीही विश्वास की तार्किकता का बचाव करने के लिए डेस्कार्टिस ने यही विधि अपनाई थी। डेस्कार्टिस ने हर बात पर सन्देह किया ताकि वह स्पष्ट रूप से ज्ञान की केवल विश्वास से अलग पहचान कर सके। तार्किक सत्य की खोज में अन्धविश्वासों और मात्र धार्मिक परम्पराओं को नकारना जरूरी था।

अब कई तरीकों से, जो विद्यार्थी स्वयं को अपनी धार्मिक विरासत, अपनी विशिष्ट मसीही धर्मविज्ञानी परम्परा से अलग करना चाहते हैं, वे धर्मविज्ञान पर पुनर्जागरण, कार्टेसियन प्रमाणों को लागू कर रहे हैं। दुखद रूप से, धर्मविज्ञान के प्रति यह पहुँच उस अधिकाँश विश्वास त्याग के लिए जिम्मेदार है जिसे हमने हाल की सदियों में पश्चिमी कलीसिया में देखा है। आधुनिक उदारवाद धर्मविज्ञान पर इस आधुनिक पुनर्जागरण कार्यक्रम को लागू किए जाने का परिणाम है।

परन्तु धर्मविज्ञानी परम्पराओं से निपटने का एक बेहतर तरीका है। स्वयं को अपनी धर्मविज्ञानी परम्परा से तोड़ने का प्रयास करने की बजाय, स्वयं को जागरूक करने का प्रयास करना ज्यादा सहायक है। अन्य शब्दों में, हमारे लिए उस विरासत को ज्यादा से ज्यादा जानना लाभदायक है जो धर्मविज्ञान के निर्माण में निरन्तर हम पर प्रभाव डालती है क्योंकि स्व-जागरूकता हमें इन प्रभावों को जाँचने और उनका प्रबन्ध करने के योग्य बनाती है।

अपने आप से कुछ प्रश्न पूछना बहुत सहायक है। पहला, आप कलीसिया की किस शाखा को अपना मानते हैं? आप किसी संस्था या किसी प्रकार के आन्दोलन, औपचारिक या अनौपचारिक संगठन के बारे में सोच सकते हैं। इससे आगे, आपकी परम्परा की सामान्य प्रवृत्तियाँ क्या हैं? आपकी कलीसिया सिद्धान्त पर अधिक बल देती है, या व्यवहार पर, या फिर कारूणिकता पर? आप किसकी सबसे अधिक परवाह करते हैं: सिद्धान्त, व्यवहार, या सौहार्द की? आपको अपने विश्वास में किस बात से प्रेरणा मिलती है? मसीह में आपका जीवन उत्साहित कैसे होता है? और फिर निम्न प्रकार के प्रश्नों को पूछने के द्वारा अपनी परम्परा के चरित्र की पहचान करने की कोशिश करें: किस प्रकार के सिद्धान्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं? किन व्यवहारों पर सबसे अधिक बल दिया जाता है? किन भावनाओं को स्वीकृत और अस्वीकृत माना जाता है? इस प्रकार के सवालों का जवाब देने पर, तो अपने स्वयं के मसीही धर्मविज्ञान का विकास करते समय आप अपनी स्वयं की पृष्ठभूमि के प्रभावों का प्रबन्ध् कर पाने की स्थिति में होंगे।

धर्मविज्ञानी परम्परा न केवल इस कारण महत्वपर्ण है कि इस का हम पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि इस कारण भी कि यह दूसरों पर प्रभाव डालती है।

दूसरों के बारे में जागरूकता

जब कभी हम दूसरे विश्वासियों के साथ धर्मविज्ञान की चर्चा करते हैं, तो हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि हमारी तरह उनके संगठन और उनकी परम्पराएँ उन पर भी बड़ा प्रभाव रखते हैं। जिस धर्मविज्ञानी धारा वे से जुड़े हैं वह उनके बहुत से विश्वासों के बारे में भी बता सकती है। इसका मतलब है कि दूसरे मसीहियों का एजेन्डा आप से बहुत अलग हो सकता है। उनकी प्राथमिकताएँ, ताकतें और कमजोरियाँ अलग हो सकती हैं। और दूसरों के बारे में इसे हम जितना अधिक पहचानते हैं, उनके साथ हमारा मेलजोल उतना ही फलवन्त होता जाएगा।

मेरा मानना है कि मसीहियों को न केवल अपने बारे में बल्कि दूसरों के बारे में भी जागरूक होना बहुत महत्वपूर्ण है, ताकि हम अनावश्यक विभाजनों से बच सकें और हमारे आपसी विचार-विमर्श फलवन्त बन सकें।

मसीही धर्मविज्ञान का अर्थ और इस बात के प्रति जागरूक होने के महत्व को देखने के बाद कि कैसे एक विशेष धर्मविज्ञानी परम्परा धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया पर प्रभाव डालती है, हमें अपने तीसरे शीर्षक की ओर आना चाहिए: सुधारवादी परम्परा। हमें इस विषय को देखने की जरूरत है क्योंकि ये अध्याय उन धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों से गहरे रूप से प्रभावित होंगे जिन्हें अक्सर संशोधित या सुधारवादी धर्मविज्ञान के रूप में पहचाना जाता है।

IV. सुधारवादी परम्परा

दुर्भाग्यवश, आज कलीसिया की इस शाखा के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। अत:, आगे के अध्यायों को अच्छी तरह समझने के लिए, आपके लिए यह महत्वपूर्ण है कि आप धर्मविज्ञानी परम्परा के रूप में समझें जिसमें से मैं इन अध्यायों को प्रस्तुत करूँगा।

मैं इसके प्रति निश्चित हूँ: जब धर्मविज्ञानी शिक्षक अपनी स्वयं की जागरूकता को अभिव्यक्त करते हैं, तो विद्यार्थी उनकी शिक्षाओं को जाँचने और जिम्मेदारी से प्रत्युत्तर देने के लिए बेहतर रीति से तैयार होते हैं। आप इन अध्यायों में कुछ बातों को आरामदायक पायेंगे, लेकिन कुछ अन्य उतनी आरामदायक नहीं होंगी। कुछ बातों के साथ आप सहमत होंगे, अन्य के साथ आप असहमत होंगे। परन्तु मेरी आशा है कि आप इन अध्यायों को इस बात को देखने के एक अवसर के रूप में लेंगे कि कलीसिया की किसी एक विशेष शाखा में धर्मविज्ञान का निर्माण कैसे किया जाता है, चाहे वह आपकी अपनी कलीसिया न हो।

अब मुझे एक बात को जितना संभव हो सके स्पष्ट करना चाहिए। इन अध्यायों को इसलिए तैयार नहीं किया गया है कि कोई सुधारवादी धर्मविज्ञान की पुष्टि करे। मेरा लक्ष्य यह नहीं है। कुछ मसीही इसे मानेंगे और कुछ नहीं, और सदा ऐसा ही होगा। परन्तु मैं इन बातों को केवल इसलिए बता रहा हूँ कि इन अध्यायों में कही गई बातें अच्छी तरह स्पष्ट हो जायें।

सुधारवादी परम्परा की रूपरेखा की खोज के लिए हम तीन विषयों को देखेंगे: पहला, कलीसिया की इस शाखा की ऐतिहासिक उत्पत्ति एवं विकास, दूसरा, सुधारवादी परम्परा की प्रवृत्तियाँ और तीसरा, इसकी धर्मविज्ञानी विशिष्टताएँ। आइए पहले हम सुधारवादी परम्परा की उत्पत्ति और विकास पर नजर डालें।

उत्पत्ति एवं विकास

सुधारवादी धर्मविज्ञान शब्द प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन से आया है। परन्तु 16वीं सदी के प्रोटेस्टेन्ट धर्मसुधार आन्दोलन में बहुत से अलग-अलग आन्दोलन शामिल थे। सर्वाधिक महत्वपूर्ण समूह थे जर्मनी में लूथर के अनुयायी, ज्यूरिख में ज्विंगली के अनुयायी और जिनेवा में काल्विन के अनुगामी। यद्यपि मोटे तौर पर हम इन तीनों कलीसियाओं को सुधारवादी कह सकते हैं, परन्तु "सुधारवादी" शब्द प्राथमिक रूप से तीसरे समूह पर लागू किया गया, वे प्रोटेस्टेन्ट जिन पर जाँन काल्विन के धर्मविज्ञान का गहरा प्रभाव पड़ा था।

कलीसिया की यह शाखा किसी भी प्रकार से केवल जिनेवा तक सीमित नहीं थी। धर्मसुधार आन्दोलन के दिनों में, सुधारवादी कलीसियाएँ बहुत सुसमाचारीय थीं और वे सारे पश्चिमी यूरोप तथा उस से भी आग पफैल गईं। काल्विन स्वयं प्रफान्स का था, और उसके बहुत से विद्यार्थियों ने फ्रान्स के ह्यूगनोट आन्दोलन की अगुवाई में सहायता की। इन युवा सेवकों ने अपने कार्य के शुरूआती दशकों में अत्यधिक सताव सहा। वास्तव में, युवा लोग जब कलीसिया स्थापित करने के लिए जिनेवा से फ्रान्स गए, तो उनके केवल छ: माह तक जिन्दा रहने की अपेक्षा थी। परन्तु जिनेवा का धर्मविज्ञान इतना मतबूत था कि ज्यादा से ज्यादा युवा मसीह की कलीसिया को बनाने के लिए फ्रान्स जाते रहे।

सुधारवादी आन्दोलन यूरोप में निरन्तर बढ़ता रहा। जर्मनी, फ्रान्स, बेल्जियम, हाँलैण्ड, हंगरी और अन्य देशों में हजारों की संख्या में कलीसियाएँ शुरू हुईं। प्रारम्भिक महाद्विपीय सुधारवादी धर्मविज्ञान के कई मुख्य बिन्दुओं का यहाँ वर्णन किया जाना चाहिए।

1561 में बेल्जिक अंगीकार और 1563 में हेडलबर्ग कैटेकिज़्म: इनका कलीसिया की सुधारवादी शाखा में अत्यधिक महत्व है। ये जेनेवा में सिखाई गई धर्मविज्ञानी प्रणाली की आरम्भिक प्रस्तुतियों में से थी।

महाद्विपीय यूरोप में सुधारवादी परम्परा की एक मतबूत भुजा डच सुधारवादी कलीसिया थी। यह संभवत: डोर्ट के सिनोड के कारण प्रसिद्ध है जो आर्मेनियन विवाद को सुलझाने के लिए 1618 से 1619 में आयोजित की गई थी। सिनोड द्वारा प्रकाशित, डोर्ट के कैनन सुधरवादी सिद्धान्तों की रूपरेखा देने और बचाव करने के लिए प्रसिद्ध हैं, जिन्हें हम काल्विनवाद के पाँच बिन्दूओं के रूप में जानते हैं।

सुधारवादी परम्परा ब्रिटेन में भी तेजी से बढ़ी। जॉन नॉक्स 1505-1572 में जीवित रहे। उसने जेनेवा में अध्ययन किया और सुधरवादी या प्रेस्बिटेरियन कलीसियाएँ स्थापित करने के लिए स्कॉटलैण्ड लौटे। 1560 का स्कॉटिश अंगीकार उस समय के बाद से एक प्रसिद्ध अभिलेख रहा है। सुधारवाद ने इंग्लैण्ड में भी जड़ें जमाई, जहाँ दूसरे समूहों के साथ मिलकर शुद्धतावादियों ने 1646 में वेस्टमिन्स्टर विश्वास का अंगीकार निकाला और 1647 से 1648 में छोटी एवं बड़ी प्रश्नोत्तरी निकाली। ये अभिलेख जो वेस्टमिन्स्टर प्रमापों के रूप में जाने जाते हैं, आज भी कई सुधारवादी कलीसियाओं में प्रयोग किए जा रहे हैं। ब्रिटेन के आस-पास कई बैपटिस्ट समूह भी स्वयं को सुधारवादी परम्परा का हिस्सा मानते थे और उन्होंने 1644 में पहली बार प्रकाशित लन्दन बैपटिस्ट अंगीकार जैसे अभिलेखों पर विश्वास जताया।

सुधारवादी परम्परा संसार के अन्य भागों में भी फैली। अँग्रेजी शुद्धतावादी और बाद में स्कॉटिश प्रेस्बिटेरियन इसे उत्तरी अमरीका में लाए। और मिशनरी प्रयासों के द्वारा यह अफ्रीका के बहुत से हिस्सों, इन्डोनेशिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया और दक्षिणी अमरीका में भी फैल गया।

इतिहास के प्रत्येक कदम पर कई ऐसे विकास हुए जिनके द्वारा सुधारवादी परम्परा ने अपनी विशेषताओं को प्राप्त किया। कलीसिया की अन्य सभी शाखाओं के समान, सुधारवादी कलीसियाओं में भी गम्भीर असफलताएँ और विश्वासत्याग हुए हैं। मुश्किलें अब भी मसीह की देह के इस हिस्से को सता रही हैं। लेकिन आज, संसार के लगभग हर भाग में, सजीव और धर्मशास्त्रीय रूप से शुद्ध सुधारवादी धर्मविज्ञान को सिखाया और जीवन में उतारा जा रहा है।

धर्मसुधार आन्दोलन के इतिहासकार डेविड स्टेनमेज़ अपनी पुस्तक, काल्विन इन कॉंटेक्स्ट में लिखते हैं:

> *लगभग चार सौ से अधिक वर्षों तक काल्विन ने यूरोप और अमरीका की पीढ़ियों के धर्म के बारे में सोचने के तरीकों, उनके राजनैतिक संस्थाओं के ढाँचों, तस्वीरों को देखने की रीतियों, काव्य एवं संगीत लेखन, आर्थिक संबंधों की धारणाओं, या भौतिक संसार को चलाने वाले नियमों की खोज के संघर्ष को प्रभावित किया है।*

अब जबकि हम कलीसिया की सुधारवादी शाखा के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं, तो हमें इसकी धर्मविज्ञानी प्रवृत्तियों को देखना चाहिए।

प्रवृत्तियाँ

मसीही परम्पराओं की प्रवृत्तियों के बारे में हमारे पूर्व के विचार-विमर्श के अनुसार, हमें पूछना चाहिए कि सुधारवादी धर्मविज्ञानी किसे सर्वाधिक महत्व देते हैं: सिद्धान्त, व्यवहार, या कारूणिकता? सदियों के दौरान, कुछ अपवादों के साथ, यह स्पष्ट रहा है कि सुधारवादी परम्परा ने सिद्धान्तों को पहला स्थान और व्यवहारों को दूसरा स्थान दिया है। कुछ शुद्धतावादी लेखकों के अपवादों को छोड़कर, भावनाओं पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया है।

सिद्धान्त और व्यवहार पर इस दो स्तरीय बल को वेस्टमिन्स्टर छोटी प्रश्नोत्तरी, जिसे आज भी संसार के कई हिस्सों में सिखाया जाता है, के तीसरे प्रश्न के उत्तर में देखा जा सकता है। इस प्रश्न, "वचन प्राथमिक रूप से क्या सिखाते हैं?" के उत्तर में प्रश्नोत्तरी का जवाब है: "वचन प्राथमिक रूप से इस बात को सिखाते हैं कि परमेश्वर के बारे में मनुष्य को क्या विश्वास करना चाहिए, और परमेश्वर मनुष्य से किन उत्तरदायित्वों की माँग करता है?"

ध्यान दें कि छोटी प्रश्नोत्तरी वचन की शिक्षा का सिद्धान्त और व्यवहार के अर्थ में संक्षेपण करती है। पहला, "हमें परमेश्वर के बारे में क्या विश्वास करना है?" यह सही सिद्धान्त है। और दूसरा, "परमेश्वर मनुष्य से किन उत्तरदायित्वों की माँग करता है।" यह कथन हमारे ध्यान को प्राथमिक रूप से सही व्यवहार की ओर आकर्षित करता है। प्रश्नोत्तरी का सिद्धान्त और उत्तरदायित्व पर यह दो स्तरीय बल अब भी कई तरह से

कलीसिया की सुधारवादी शाखा के मुख्य मुद्दों को प्रतिबिम्बित करता और आकार देता है। परन्तु प्रश्नोत्तरी के उत्तर से एक अनुपस्थित बात है संबंध या भावनात्मक जोड़ जिसे परमेश्वर का वचन परमेश्वर और उसके वाचा के लोगों के बीच बनाता है।

फिर, क्या यह कोई आश्चर्य है, कि सुधारवादी परम्परा के मसीहियों को अक्सर "चुने हुए ठण्डे लोग" कहा जाता है? जब भावनाओं को दरकिनार करने की कीमत पर सिद्धान्त और उत्तरदायित्व पर बल दिया जाता है, तो सिद्धान्त पर हमारा बल बुद्धिवाद की ओर तथा उत्तरदायित्व पर हमारा बल कानूनवाद की ओर मुड़ सकता है। सिद्धान्त और व्यवहार सुधारवादी धर्मविज्ञान की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हैं, और दोनों मसीह की देह के इस हिस्से के लिए मजबूती और कमजोरियाँ हैं। और भले या बुरे के लिए, ये मजबूती और कमजोरियों दोनों के रूप में बार-बार इन अध्यायों में आयेंगे।

चूँकि सुधारवादी परम्परा धर्मविज्ञान के अन्य पहलूओं के ऊपर सिद्धान्त को महत्व देती है, इसलिए इस बात में कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि सुधारवादी धर्मविज्ञान के बारे में जानकारी पाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है इसकी ज्यादा महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक विशेषताओं का अध्ययन करना। इन समर्पणों को समझने के द्वारा आपको इन अध्यायों में प्रस्तुत किए गए विचारों को अच्छी प्रकार जाँचने में सहायता मिलेगी।

विशेषताएँ

हम चार सैद्धान्तिक आधारों का वर्णन करेंगे जो कलीसिया की इस शाखा की विशेषताएँ हैं: पहला, धर्मसुधार आन्दोलन के सोला; दूसरा, पवित्र शास्त्र की एकता; तीसरा, परमेश्वर का सिद्धान्त; और चौथा, मसीहियत और मानवीय संस्कृति के बीच संबंध पर एक विशिष्ट अध्ययन। आइए पहले हम सुधारवादी विचार के धर्मसुधार आन्दोलन के सोला को देखें।

धर्मसुधार आन्दोलन के सोला

अन्य प्रोटेस्टेन्ट लोगों के साथ, सुधारवादी धर्मविज्ञानियों ने कुछ सिद्धान्तों की पुष्टि की है जिन्हें आमतौर पर "सोला" के नाम से जाना जाता है। ये सिद्धान्त पारम्परिक रूप से लैटिन कथनों में हैं जिन सबमें "सोला" शब्द आता है, जिसका अर्थ है "केवल" या "मात्रा" अधिकाँश सुसमाचारीय मसीहियों ने इनमें से कुछ को अवश्य सुना होगा: सोला स्क्रिप्चरा, जिसका अर्थ है "केवल वचन"; सोलो क्रिस्टो, जिसका अर्थ है "केवल मसीह"; सोला फिडे, जिसका अर्थ है "केवल विश्वास"; सोला ग्राटिया, जिसका अर्थ है "केवल अनुग्रह"; और सोली डियो ग्लोरिया, जिसका अर्थ है "केवल परमेश्वर को महिमा"

सोला स्क्रिप्चरा का सिद्धान्त बताता है कि केवल वचन ही विश्वास और जीवन की अचूक कसौटी है। यह रोमन कैथोलिक विश्वास के विपरीत है कि वचन के अलावा स्वयं कलीसिया में एक अचूक परम्परा पाई जाती है जिसे सार्वभौमिक सभाओं या पोप द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है।

सोलो क्रिस्टो मध्यस्थता के लिए सन्तों या मरियम की ओर देखने वाले लोगों के विपरीत पुष्टि करता है कि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच केवल यीशु मसीह ही एकमात्र बिचवई है। मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता है, केवल वही है जिसकी ओर फिरने से पापियों को उनके पापों से क्षमा मिल सकती है और वे परमेश्वर के क्रोध से बच सकते हैं।

सोला फिडे, का सिद्धान्त बताता है कि परमेश्वर केवल विश्वास ही के द्वारा विश्वासियों को धर्मी ठहराता है, मानवीय प्रयास या मानवीय कार्यों जैसे किसी और साधन से नहीं।

सोला ग्राटिया, उस मार्ग का वर्णन करता है जिसके द्वारा परमेश्वर हमें उद्धार की आशीषें प्रदान करता है। परमेश्वर अनन्तकाल से अपने चुने हुए लोगों पर अनुग्रह करता आया है। वह हमें मसीह के गुण के आधार पर बिना किसी कीमत के धर्मी ठहराता है और मसीह के गुण को उदारतापूर्वक हमारे खाते में जोड़

देता है। सोला ग्राटिया इस बात पर जोर देता है कि हमारा कोई भी व्यक्तिगत गुण हमारे उद्धार में किसी प्रकार का योगदान नहीं करता है। अनन्त चुनाव से अनन्त महिमा तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया केवल परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है।

सोली डियो ग्लोरिया, अर्थात "केवल परमेश्वर को महिमा" का सिद्धान्त है कि सारी सृष्टि और सृष्टि के अन्दर के कार्य अन्तिम रूप से केवल परमेश्वर की महिमा के लिए बनाए गए हैं। सुधारवादियों ने इसलिए इस नारे का प्रयोग किया क्योंकि वे उन सभी सिद्धान्तों के विरूद्ध थे जो मनुष्यों को श्रेय देने के द्वारा उस सम्मान से दूर हो जाते थे जो केवल परमेश्वर का है।

यद्यपि हम सोला स्क्रिप्चरा के सिद्धान्त का वर्णन कर चुके हैं, जो वचन के अधिकार पर ध्यान केन्द्रित करता है, परन्तु इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सुधारवादी परम्परा पुराने नियम और नये नियम की एकता के अपने विचार में कलीसिया की अन्य शाखाओं से अलग है।

पवित्र शास्त्र की एकता

हाल ही के इतिहास में, उत्तरी अमरीका और संसार के अन्य भागों में जहाँ अमरीकी मिशनरियों का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है, बहुत से सुसमाचारीय मसीहियों के लिए दैवीय अनुकम्पावाद (dispensationalism) नामक आन्दोलन के किसी रूप का अनुगमन करना सामान्य बात हो गई है। निश्चित तौर पर आज अनुकम्पावाद के बहुत से रूप हैं, परन्तु इनमें से अधिकाँश रूपों में एक सामान्य बात है - पुराने नियम और नये नियम के बीच मूलभूत विभाजन। पुराने नियम को सामान्यत: व्यवस्था के रूप में देखा जाता है, जबकि नये नियम को सुसमाचार के रूप में। ऐसा माना जाता है कि पुराना नियम कार्यों पर बल देता है, परन्तु नया नियम अनुग्रह पर। यह समझा जाता है कि पुराना नियम केवल न्याय लाता है, जबकि नया नियम उद्धार लाता है। मुझे याद है जब मैं सात वर्ष का था तो हमारे सन्डे स्कूल के शिक्षक ने हमसे कहा, "बच्चों क्या तुम इस बात से खुश नहीं हो कि तुम नये नियम के समय में रह रहे हो? पुराने नियम में परमेश्वर बहुत बुरा और क्रोधित था, और अब वह बहुत ही दयालु और प्रेमी है। उस समय, लोगों को अपना उद्धार कमाना पड़ता था। परन्तु अब हम उसे अनुग्रह के द्वारा प्राप्त करते हैं।" अधिकाँश सुसमाचारीय विश्वासियों का विचार किसी न किसी स्तर पर मेरे बचपन के शिक्षक के बहुत करीब है।

इसके विपरीत, सुधारवादी परम्परा का मानना है कि सम्पूर्ण बाइबल एक एकीकृत धर्मविज्ञान को प्रस्तुत करती है। पुराना नियम और नया नियम एक दूसरे के विरूद्ध नहीं हैं। व्यवस्था पुराने नियम और नये नियम दोनों में है। सुसमाचार दोनों नियमों में है। दोनों नियमों में अच्छे कार्यों की माँग की गई है। दोनों नियमों में दैवीय अनुग्रह उद्धार को लाता है। पुराने और नये नियम दोनों में न्याय है, और उद्धार पुराने और नये नियम दोनों में आता है। निस्सन्देह, दोनों नियमों में अन्तर है, परन्तु ये अन्तर विकासमय हैं। यानि, ये प्रारम्भिक अवस्थाओं से बाद की अवस्था में धर्मशास्त्रीय विश्वास के विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं-परन्तु विश्वास अब भी वही है।

जब हम पुराने नियम और नये नियम के बीच के अन्तरों को उचित रूप से देखते हैं, तो हम वेस्टमिन्स्टर विश्वास अंगीकार के अध्याय 7, भाग 6 के साथ इस निष्कर्ष पर आते हैं, कि पुराना और नया नियम "अनुग्रह की दो वाचाएँ नहीं हैं जो तत्व में अलग हैं, बल्कि विभिन कालों के अन्तर्गत एक और समान हैं।"

निश्चित तौर पर, पवित्र शास्त्र की एकता पर बल के कारण सुधारवादी धर्मविज्ञान में कुछ गलतियाँ आई हैं, कई बार पुराने नियम और नये नियम में पर्याप्त अन्तर नहीं किया जाता है। फिर भी, बाइबल की एकता पर यह बल सुधारवादी धर्मविज्ञान की सबसे बड़ी ताकतों में से एक है। आप देखेंगे कि इन अध्यायों में हमारे धर्मविज्ञान के निर्माण की खोज में हम पुराने नियम का नये नियम के बराबर प्रयोग करेंगे। हमारा लक्ष्य एक ऐसे धर्मविज्ञान का निर्माण करना होगा जो सम्पूर्ण बाइबल के अनुरूप हो, न कि केवल नये नियम के। इन अध्ययनों में हर मोड़ पर सुधारवादी परम्परा का प्रभाव इस रीति से स्पष्ट होगा।

तीसरा, सोली डियो ग्लोरिया, यानि सारी बातें परमेश्वर की महिमा के लिए हैं, पर बल देने के साथ सुधारवादी धर्मविज्ञान परमेश्वर के सिद्धान्त पर एक विशेष बल देता है।

परमेश्वर का सिद्धान्त

ऐतिहासिक रूप से, सुधारवादी धर्मविज्ञान ने परमेश्वर की अपरम्पारता और निकटता पर बराबर ध्यान दिया है। वेस्टमिन्स्टर विश्वास के अंगीकार जैसे सुधारवादी प्रमाण दृढ़ता से परमेश्वर के अनन्त अपरम्पार निर्णयों और परमेश्वर की सर्वव्यापी उपलब्धता के बारे में बोलते हैं। सुधारवादी धर्मविज्ञान का यह ऐतिहासिक सन्तुलन इस तथ्य को प्रतिबिम्बित करता है कि बाइबल परमेश्वर को अपरम्पार और सर्वव्यापी दोनों रूपों में वर्णित करती है। कुछ पदों में परमेश्वर को ऊँचा, दूर, और सब बातों के ऊपर और परे दिखाया गया है। और अन्य पदों में, वचन परमेश्वर की व्यापकता के बारे में बात करता है, जो इतिहास के साथ निकटता एवं घनिष्ठ रूप से जुड़ा है और विशेषत: अपने लोगों के साथ उपस्थित है।

परन्तु, दूसरी मसीही परम्पराओं की तुलना में, सुधारवादी धर्मविज्ञान की प्रवृत्ति परमेश्वर की व्यापकता से अधिक अपरम्पारता पर बल देने की रही है। अन्य मसीही परम्पराएँ अक्सर उन दैवीय गुणों पर बल देती हैं जो परमेश्वर की निकटता से जुड़े हैं, जैसे परमेश्वर की दयालुता, दया, प्रेम, नम्रता, उनका धीरज, और उपस्थिति। सुधारवादी धर्मविज्ञान इन दैवीय गुणों की पुष्टि करता है, परन्तु इसमें दूसरे गुणों पर ज्यादा बल देने की प्रवृत्ति रही है, जैसे परमेश्वर की अनन्तता, अपरिवर्तनीयता, सर्वोच्चता, उनका स्व-आधारित अस्तित्व, सर्वसामर्थ्य, और सर्वव्यापकता।

उदाहरण के लिए, वेस्टमिन्स्टर छोटी प्रश्नोत्तरी द्वारा परमेश्वर की सुधारवादी परिभाषा को सुनें। प्रश्न संख्या 4, "परमेश्वर क्या है?" के जवाब में प्रश्नोत्तरी इस प्रकार उत्तर देती है, "परमेश्वर आत्मा है जो अपने अस्तित्व, बुद्धि, सामर्थ, पवित्रता, न्याय, भलाई, और सत्य में असीमित, अनन्त और अपरिवर्तनीय है।" यह उत्तर सत्य है। यह वचन के अनुरूप है। परन्तु यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के अपरम्पार गुणों पर बल देता है, वे गुण जो उन्हें सब कुछ के ऊपर ठहराते हैं।

यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि 1920 के दशक के बाद से, उत्तरी अमरीका के बहुत से भागों और संयुक्त राज्य में सुधारवादी धर्मविज्ञान की बेदारी छाई रही है। सुधारवादी धर्मविज्ञान की पताका के अधीन नई संस्थाएँ, सेमिनारियाँ, और महाविद्यालय खुले। कई परिस्थितियों में, इस नव-काल्विनवादी आन्दोलन के सहभागियों ने परमेश्वर की अपरम्पारता या सर्वोच्चता पर इतना अधिक बल दिया कि व्यावहारिक तौर पर उन्होंने परमेश्वर की अपरम्पारता और निकटता के बीच धर्मशास्त्रीय और अंगीकारी सन्तुलन को नकार दिया। जब आप मसीहियों को ऐसी बातें कहते सुनते हैं कि, "प्रार्थना करने और सुसमाचार सुनाने का एकमात्र कारण यह है कि परमेश्वर ने इसकी आज्ञा दी है", तो आप इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि आपका सामना नव-काल्विनवाद की अति से हो रहा है। जब एक धर्मविज्ञानी द्वारा कहा जाने वाला प्रत्येक कथन किसी न किसी तरह परमेश्वर की सर्वोच्चता से जुड़ा है, तो यह आमतौर पर एक चरम विचार को प्रतिबिम्बित करता है। जब आप धर्मविज्ञानियों को इस प्रकार बोलते हुए सुनते हैं मानो मानवीय इच्छा और संसार के इतिहास का कोई महत्व नहीं है, तो संभव है कि यह नव-काल्विनवाद हो जो बाइबल की शिक्षा और ऐतिहासिक सुधारवादी धर्मविज्ञान से भटक गया है।

फिर भी, दूसरों के साथ तुलना में, ऐतिहासिक सुधारवादी धर्मविज्ञान ने भी महत्वपूर्ण रीतियों से परमेश्वर की अपरम्पारता पर बल दिया है, विशेषत: सोटेरियोलोजी, अर्थात उद्धार के सिद्धान्त में। सुधारवादी धर्मविज्ञान बल देता है कि उद्धार अनन्तकाल से अनन्तकाल तक है, पूर्णत: परमेश्वर के सर्वोच्च अनुग्रह का परिणाम है। यद्यपि परमेश्वर की अपरम्पारता को चरम सीमा तक ले जाया जा सकता है, इसकी उचित समझ मसीही धर्मविज्ञान के कई तत्वों को आधार प्रदान करती है, और इसलिए यह इन अध्यायों का विशेष दिशाओं में मार्गदर्शन करेगी।

कलीसिया की सुधारवादी शाखा की एक और विशेषता का वर्णन शेष है, मसीहियत और संस्कृति के बीच संबंध का विचार।

मानवीय संस्कृति

जेनिवा में काल्विन की सेवकाई के दिनों से, सुधरवादी परम्परा ने इन विषयों पर सतत् ध्यान दिया है। विचार के इस विशिष्ट बिन्दू को सार-रूप देने का एक तरीका है रिचर्ड नेबर द्वारा अपनी पुस्तक "क्राइस्ट एण्ड कल्चर" में दिए गए प्रसिद्ध प्रारूप का अनुगमन करना। इस पुस्तक में, नेबर संस्कृति के प्रति विभिन्न मसीही बर्तावों को पाँच मुख्य समूहों में एकत्रित करता है। संस्कृति के विरूद्ध मसीह नेबर द्वारा इस विचार को दिया गया शीर्षक है कि संस्कृति बुरी है और मसीहियों को उससे बचना चाहिए।

अलगाववादी आन्दोलन जैसे मध्ययुगीन आश्रम क्रम (monastic orders) तथा आधुनिक अमीश एवं मेनोनाइट समुदाय इस विचार के प्रसिद्ध रूप हैं।

नेबर संस्कृति का मसीह नामक अभिव्यक्ति का प्रयोग उन विचारों को समझाने के लिए करता है जो प्राथमिक रूप से संस्कृति की पुष्टि करते हैं और मसीह को संसार में जो कुछ वे पाते हैं उसमें शामिल करने का प्रयास करते हैं। इस व्यवहार को बहुत सी आधुनिक उदारवादी प्रोटेस्टेन्ट कलीसियाओं में पाया जा सकता है।

संस्कृति के विरूद्ध मसीह और संस्कृति के मसीह की दो चरम सीमाओं के बीच, नेबर तीन विचारों का वर्णन करते हैं जो विभिन्न रीतियों से मसीह और मानवीय संस्कृति में मेल-मिलाप का प्रयास करते हैं: संस्कृति से ऊपर मसीह वह विचार है जो मसीह और संसार को मिलाने का प्रयास करता है; मसीह और विरोधाभास में संस्कृति उस विचार को बताता है जो मसीह और संसार के बीच द्वैतवाद को देखता है; और मसीह संस्कृति का रूपान्तरण करने वाला इस मत से संबंधित है कि मसीहियत को संस्कृतियों पर प्रभाव डालना और उन में धर्मशास्त्रीय नियमों के अनुरूप "परिवर्तन" लाना चाहिए। नेबर के विचार में, सुधारवादी परम्परा इस आखरी श्रेणी में उपयुक्त बैठती है। विभिन्न समयों पर सुधारवादी परम्परा ने विभिन्न रीतियों से इस विचार को लागू किया है।

दुखद रूप से, इनमें से कुछ प्रयास यूरोपीय साम्राज्यवाद से नजदीकी रूप से जुड़े हुए थे। परन्तु भूतकाल में रूपान्तरण प्रारूप के कुछ सामान्यत: सकारात्मक उदाहरण भी रहे हैं। सामान्यत:, मसीह द्वारा मानवीय संस्कृति को रूपान्तरित करने के सकारात्मक उदाहरणों के रूप में हम इंग्लैण्ड और अमरीका के शुद्धतावादियों के साथ हॉलैण्ड में अब्राहम कैपर के प्रयासों की ओर इशारा करते हैं। सारी घटनाओं में, संस्कृति पर आम सुधारवादी स्थिति को इस तरह संक्षेप में बताया जा सकता है: जब परमेश्वर ने सबसे पहले मानव को बनाकर अदन की वाटिका में रखा, उन्होंने मानव को एक सांस्कृतिक आदेश दिया -- उत्पत्ति 1:28 के वे परिचित शब्द:

> *"फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।" (उत्पत्ति 1:28)*

आदम और हव्वा को धरती और उसकी क्षमताओं का परमेश्वर की महिमा के लिए प्रबन्ध करते हुए, संसार पर परमेश्वर के सह-शासकों के समान सेवा करने के लिए बुलाया गया था। सुधारवादी विचार के अनुसार, इस सांस्कृतिक आदेश को दरकिनार नहीं किया गया है, शेष पवित्राशास्त्र इसकी पुष्टि करता है। वास्तव में, मसीह द्वारा अपनी कलीसिया को दिया गया सुसमाचार का आदेश परमेश्वर के जनों को पाप से छुड़ाने के लिए दिया गया था ताकि इस सांस्कृतिक आदेश को पूरा किया जा सके।

इस कारण, सुधारवादी धर्मविज्ञान बल देता है कि जीवन का हर पहलु मसीह की प्रभुता के अधीन लाया जाना चाहिए। सुधारवादी धर्मविज्ञान इस विचार का इनकार करता है कि जीवन के कुछ पहलु धार्मिक तथा कुछ सांसारिक हैं। इस विचार के अनुसार, सम्पूर्ण जीवन धार्मिक है, जो सच्चे या झूठे धर्म द्वारा शासित होता है। कला, विज्ञान, कानून, राजनीति, व्यापार, परिवार एवं विद्यालय-मानवीय संस्कृति के प्रत्येक पहलू को इस तरह पूरा किया जाना चाहिए जिससे परमेश्वर के वचन का सम्मान हो और परमेश्वर को महिमा मिले।

जब हम आपके धर्मविज्ञान के निर्माण के लिए इन अध्यायों को देखते हैं, तो कुछ विचारधाराएँ जानी-पहचानी तथा कुछ अपरिचित लग सकती हैं। बहुत से मामलों में, यह इस बात का परिणाम होगा कि आप स्वयं को सुधारवादी धर्मविज्ञान के कितना करीब पाते हैं। परन्तु चाहे आप सुधारवादी धर्मविज्ञान को अपना समझें या नहीं, यह कलीसिया की एक शाखा का प्रतिनिधित्व करती है जिसके पास उन सब को देने के लिए बहुत कुछ है जो इसके सम्पर्क में आते हैं।

V. उपसंहार

इस अध्याय में हमने कुछ नजरियों को सामने रखा है जो मसीही धर्मविज्ञान की खोज में हमारी अगुवाई करेंगे। पहले हमने मसीही धर्मविज्ञान को इस रूप में परिभाषित किया जो प्रेरितों के विश्वास कथन के अनुरूप हो। हमने यह भी देखा कि हमें इस तथ्य के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है कि मसीही धर्मविज्ञान के अन्दर कई तरह की परम्पराएँ कलीसिया की विभिन्न शाखाओं को आकार देती हैं; और अन्त में, हमने बताया कि इन अध्यायों का सुधारवादी परम्परा के प्रभावों द्वारा मार्गदर्शन किया जाएगा।

इन मूलभूत नजरियों को ध्यान में रखते हुए, हम उन बहुत सी गलतियों से बच सकेंगे जिनका सामना धर्मविज्ञान के विद्यार्थियों को अक्सर करना पड़ता है। हमारे अध्ययन की इन रूप रेखाओं को याद रखना हमें आपके धर्मविज्ञान के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने में सहायता करेगा।